कुछ इनके भी नज़रिये परमात्मा के बारे में...

भारत में एक यही संस्थान कर रहा मनुष्य से देवता बनाने का महान कार्य

मन एक साधन है जो हमारे बंधन या स्वतंत्रता का कारण हो सकता है, ये तो इसके उपयोग पर निर्भर करता है। ब्रह्माकुमारी बहनों ने आम आदमी को आसान तरीके से राजयोग सिखाया है। वे मनुष्य को देवता बनाने का कठिन कार्य कर रही हैं। मूल्य किसी भी राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति है। आज पूरे विश्व में योग के भारतीय विज्ञान की मांग है। ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संगठनों ने राजयोग को जन-जन तक ले जाने के लिए बहुत महान कार्य किया है। प्रत्येक भारतीय को इस कार्य पर गर्व महसूस करना चाहिए। भारत में ऐसे संस्थान का होना बहुत ही गर्व की बात है। - **माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ,उ.प्र.**

विश्व शांति प्रसार की अद्भुत संस्था

दुनिया भर में शांति का फैलाव करने वाली यदि कोई संस्था है तो वो यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही है। योग के माध्यम से विश्व को शांति प्रदान करने में कोई संस्था यदि यशस्वी पाई गई है तो वो है यह ब्रह्माकुमारी संस्था। पुरुष प्रधान समाज में महिला भी धार्मिक, यौगिक भूमिका निभा सकती है, इसे प्रैक्टिकल कर दिखाने वाली संस्था है ब्रह्माकुमारीज़। विश्व में शांति का प्रसार करने में इस संस्था ने महती भूमिका निभाई है। - **श्री 1008 श्रीशैल जगतगुरू चन्ना सिद्धाराम।**

मुझे साक्षात भगवान की अनुभूति हुई

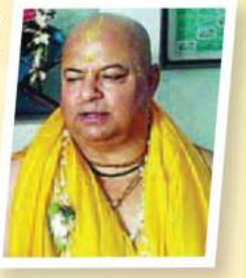

जीव ईश्वर से कैसे मिले इसका ज्ञान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में ही दिया जाता है। यहां योग, ध्यान, साधना, उपासना तथा आराधना की जो शैली सिखाई जाती है, उसी से आत्मा एवं परमात्मा का मिलन संभव है। संसार परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। डायमण्ड हॉल में बाबा मिलन पर मुझे दिव्य अनुभव हुआ और साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई। - **रसिक पीठाधीश महंत जन्मेजयशरण,अध्यक्ष,श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास,जानकी घाट,बड़ा स्थान,अयोध्या।**

शास्त्रों में वर्णित दिव्यता का अनुभव यहां हुआ

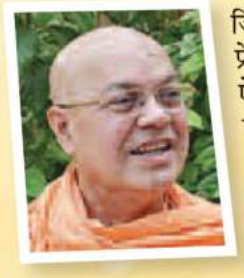

जिस प्रकार की यहां पवित्रता, प्रेम, मानवता तथा दिव्यता है, ऐसी हर घर में हो। मैं दादी जी सहित अनेक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों से मिला, उनमें एक अनोखी अलौकिकता का अनुभव हुआ। शास्त्रों में जिन विकार रहित योगियों का वर्णन है वह इन सभी आत्माओं द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है। मैं चाहूंगा कि हर घर में इनके जैसा ही स्वरूप हो, हर घर में ब्रह्माकुमारियों का ओजस हो। - **एच.एच. श्री स्वामी अध्यात्मनंद जी महाराज,अध्यक्ष, शिवानंद आश्रम,अहमदाबाद।**

अब है... पूजने के साथ पूजनीय बनने का समय

परमपिता परमात्मा ज्ञान के सागर, सुख के सागर, शांति के सागर, सर्वशक्तिवान, प्रेम के सागर तथा खुशियों के भंडार हैं, तो भला उनका पुत्र, उनके बच्चे कैसे अशांत हो सकते हैं, कैसे अपने पिता के प्यार से वंचित रह सकते हैं! कैसे निर्धन, बलहीन हो सकते हैं!

मैं रोज़ उनपर दूध की लोटी चढ़ाता हूँ। मैं रोज़ पूजा-पाठ करता हूँ, ध्यान भी लगाता हूँ, और मैंने चारों धामों की यात्रा भी की, कथा भी करता हूँ, फिर भी मुझे जो चाहिए, वो संतुष्टता मुझे अपने जीवन में अनुभव नहीं होती। कहीं न कहीं ऐसा लगता कि मैं जो कर रहा हूँ, उसका सीधा तारतम्य मेरे जीवन के साथ नहीं जुड़ पा रहा है। मन में कभी-कभी विचार आता कि जिसको मैं पूजता हूँ, याद करता हूँ और खोजता हूँ, क्या मेरी कभी उनसे मुलाकात भी होगी! क्या मैं कभी उनसे बात भी कर सकूंगा! क्या मैं अपने दिल की बात उनसे कर अपने जीवन में सुकून महसूस कर सकूंगा! मेरी दिली इच्छा है कि मेरे जीवन में सुख, शांति, प्रेम, आनंद और समृद्धि सदा प्रचुर मात्रा में बनी रहे। क्या ऐसा भी कभी समय आयेगा!

मैंने शास्त्रों एवं पुराणों में भी पढ़ा कि परमात्मा का अवतरण होता है, और वो परकाया प्रवेश कर फिर से भक्ति का फल देने इस सृष्टि पर आते हैं। भक्ति का फल ज्ञान, अर्थात् समझ देते हैं कि तुझे जीवन मिला ही है खुशियों से जीने के लिए।

अब वे न सिर्फ अपना परिचय देते हैं, बल्कि स्वयं हमारा भी सही परिचय हमें देते हैं। साथ ही साथ हमारा और उनके बीच का सम्बन्ध क्या है, ये भी बताते हैं। जैसे कि हमारा और उनका सम्बन्ध पिता और पुत्र का ही होगा ना! भक्ति में हम गाते ही रहते हैं, त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव... लेकिन सम्बन्ध की पहचान न होने के कारण उनसे हम रूबरू हो नहीं पाते थे। अब वो कहता है, तुम जाने-अनजाने मुझे याद भी करते थे और पूजते भी थे। अब मैं आया हूँ, अब मुझे तथा स्वयं को

कैसे अशांत हो सकते हैं, कैसे अपने पिता के प्यार से वंचित रह सकते हैं! कैसे निर्धन, बलहीन हो सकते हैं!

वास्तविक स्वरूप में जान और पहचान कर मुझे याद करो। तुम सिर्फ पूजते ही न रहो, बल्कि मैं तो तुम्हें पूजनीय बनाने आया हूँ। तुम तो मास्टर हो ना! पिता ज्ञान के सागर, सुख के सागर, शांति के सागर, सर्वशक्तिवान, प्रेम के सागर तथा खुशियों का भंडार हैं, तो भला उनका पुत्र, उनके बच्चे कैसे अशांत हो सकते हैं, कैसे अपने पिता के प्यार से वंचित रह सकते हैं! कैसे निर्धन, बलहीन हो सकते हैं! अगर किसी धनवान व्यक्ति की तरह हम भी धनवान बनने की इच्छा रखते हैं तो सिर्फ उसके नाम की माला जपने से तो नहीं बन जायेंगे ना! तो हमें भी उन जैसे कर्म करने होंगे, उन जैसे गुणों को अपने जीवन में अपनाना होगा। इसी तरह हमें भी अगर परमात्मा से मिलन मनाना है, तो न सिर्फ उन्हें पूजते ही रहना है, बल्कि उन जैसा पूज्य स्वरूप, देवत्व को अपने जीवन में धारण करना होगा। तभी हम उन जैसा और उनके लायक बन पायेंगे।

अवतरण का उल्लेख शास्त्रों और पुराणों में भी...

"हाँ, नव सृष्टि के निर्माण हेतु 'मैं' ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होऊंगा"

वेदों-पुराणों में भी शिव अवतरण की बात कही गई है। शिव पुराण में लिखा है कि भगवान शिव ने कहा- मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होऊंगा। इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रुद्र हुआ। (ये वाक्य शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42 वें अध्याय में लिखा है) शिव ने ब्रह्मा मुख द्वारा सृष्टि रची। शिवपुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है। भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उनके द्वारा सतयुगी सृष्टि की स्थापना की।

एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग

मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में एक अण्ड प्रकट हुआ जो हज़ारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिव पुराण में धर्म संहिता में लिखा है कि कलियुग के अन्त में प्रलय काल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जोकि कालाग्नि के समान ज्वालामान था। वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरम्भ हुआ। इस तरह हम देखते हैं कि भारत के सभी वेद-ग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। कहीं उसकी व्याख्या अण्डाकार ज्योति के रुप में, तो कहीं सूर्य से भी प्रकाशमान ज्योति के रुप में की गई है।

परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनो

हे मनुष्य आत्माओं! अब समय आ चुका है विषय-विकारों से मुक्त होकर परमपिता परमात्मा से मंगल मिलन मनाने का। अभी नहीं तो कभी नहीं। ऐसा न हो परमात्मा आकर के अपना कार्य कर जाएं और हम देखते ही रह जाएं। समय निकल जाने पर हमारे पास पछतावे के अलावा और कुछ हाथ नहीं रह जाता है। यदि हमें अपने भाग्य को जगाना है और नई सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना के इस कार्य में सहयोगी बनना है, तो परमात्मा शिव के इस महान कार्य में सहयोगी बनना है। परमात्मा शिव के इस महान कार्य में अपना तन-मन-धन सफल कर 21 जन्मों की बादशाही के मालिक बनने का सुअवसर हमारे सामने है।

ज्योति ने प्रकट होकर किया नवयुग का निर्माण

महाभारत में भी लिखा है कि जब यह सृष्टि तमोगुण और अन्धकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।

जेहोवा शिव का ही पर्यायवाची

देखा जाए तो सिर्फ भारत के धर्म ग्रन्थों में ही नहीं बल्कि यहूदी, ईसाई, मुसलमानों की पुरानी धर्म पुस्तक तोरेत का आरम्भ भी ऐसे ही होता है। सृष्टि संरचना की प्रक्रिया इस प्रकार से है कि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदि काल में परमात्मा ने ही आदम एवं हव्वा को बनाया जिनके द्वारा स्वर्ग रचा। भगवान का नाम जेहोवा मानते हैं जो परमात्मा शिव का ही पर्यायवाची है।